मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

©2020 marumegh
ISSN:2456-2904

जैविक कृषि

[1]राजेश कुमारी,एंव [2]सुनिता चौधरी

[1]डिपार्टमेंट ऑफ प्लांट प्रोटेक्शन , फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज , अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़, उत्तरप्रदेश , इंडिया– 202002

[2]डिपार्टमेंट ऑफ एग्रोनोमी, इंस्टिट्यूट ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज आईएएस, बी एच यू, वाराणसी–221005, इंडिया

Email: kumarirajesh001@gmail.com

परिचय

जिस प्रकार से हमारी जनसँख्या बढ़ती जा रही है उस प्रकार से देखा जाये तो हमारा कृषि उत्पादन भी बढ़ा है। ताकि हम अपनी खाद्य संबंधी आवश्यकतों की पूर्ति कर सकें। लेकिन इसी क्रम में पर्यावरण का अवनयन भी हुआ है क्योंकि जिस प्रकार से हम ने कृषि में आधुनिक तकनीक तथा रसायन का उपयोग किया है वह कही न कही हमारे पर्यावरण को प्रभावित कर रही है। उदाहरणतया जिस प्रकार से हमने हरितक्रांति में अंधाधुंध रासायनिक खादों व कीटनाशी इत्यादि का प्रयोग किया उस कर्म में हमारी खाद्यान उत्पादकता तो निश्चित ही बढ़ी है लेकिन हम परम्परागत खेती की जो हमारी प्रणाली थी जैविक खेती उससे हम दूर हो गए हैं। यही कारण है की आज हम जिस प्रकार से पर्यावरण का अवनयन देख रहे हैं उस प्रकार से कही न कही हम फिर से जैव कृषि की और नई सम्भावनाओ के साथ देख रहे हैं।

जैव कृषि में हमारे लिए संभावनाएं, महत्व और खाद्य आवश्यकताओं को वर्तमान संदर्भ में पूर्ति–

कृषि एक ऐसी पद्धति है, जिसमे रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों तथा खरपतवारनाशियों के स्थानपर जीवांश खाद (गोबर की खाद कम्पोस्ट, हरी खाद, जीवाणु कल्चर, जैविक खाद) तथा जैविक कीटनाशियों (बायो–पेस्टिसाइड्स) अदि का उपयोग किया जाता है।

कृषि की एक पारम्परिक विधि है, जिससे भूमि की उर्वरता में सुधार होने के साथ ही पर्यावरण को भी लाभ होता है। जैविक कृषि पद्धतियों को अपनाने से धारणीय कृषि, जैवविविधता संरक्षण आदि लक्ष्यों को भी प्राप्त किया जा सकता है।

वर्तमान में पर्यावरण सुरक्षा जैसी समस्याओं को देखते हुए सरकार ने जैविक कृषि के लिए कई राष्ट्रीय कार्य क्रमों को बढ़ावा दिया है। सिक्किम 2016 में भारत का पहला पूर्ण रूप से जैविक कृषि अपनाने वाला राज्य बना।

जैविक खेती के सिद्धांत–

मृदा प्रकृति की धरोहर है।	पौधों को पोषण के बजाय मृदा पोषण को प्राथमिकता।
प्रत्येक जीव के लिए मृदा ही स्त्रोत है।	पारिस्थितिकी का संरक्षण एवं पुनरूद्धार।
जैविक खेती का उद्देश्य–	
रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों के बजाय कार्बनिक खाद एवं कीटनाशकों का प्रयोग।	
फसल अवशेषों का उचित उपयोग।	कृषि उत्पादन में चरणबद्ध तरीके से गुणात्मक सुधार।
जैविक तरीको के द्वारा कीट व रोग नियंत्रण।	फसल चक्र को अपनाना।
मृदा संरक्षण हेतु उपायों को अपनाना।	

जैविक कृषि के महत्व

भूमि की उर्वरा बने रहना।	रसायन मुक्त चारे की प्राप्ति से पशु उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार।
प्रदूषण रहित पर्यावरण अनुकूल।	फसल अवशेषों के निपटान की समस्या नहीं।
कम पानी की आवश्यकता।	अच्छी गुणवत्ता की पैदावार।
कृषि मित्र जीवों की संख्या में बढ़ोतरी।	मनव स्वास्थ्य के साथ–साथ पर्यावरण सुधार।
कम लागत तथा अधिक लाभ।	वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी होने से निर्यात वृद्धि।

जैविक कृषि की विशेषताएँ–

जैविक खाद का उपयोग।	समय पर अच्छी व गहरी जुताई।
समन्वित कीट प्रबंधन।	खरपतवार को यांत्रिक वृद्धि से हटाना।
फसल चक्र को अपनाना।	

कृषकों को लाभ–

भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि।	फसल अपशिष्ट समस्या का निवारण।
सिंचाई अंतराल में वृद्धि।	आत्म निर्भर किसान।
रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से लागत में 25 से 30% की कमी।	

मिट्टी के लिए लाभ–

मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार।	भूमि की जल धारण क्षमता में वृद्धि।
भूमि का उपजाऊपन बने रहना।	मिटटी एवं जल प्रदूषण में कमी।
पर्यावरण की दृष्टि से लाभ	पर्यावरण अनुकूल कृषि।
भूमिगत जलस्तर में वृद्धि।	भूमि से पानी का वाष्पीकरण कम होने से जल संरक्षण।
जल संरक्षण को बढ़ावा से प्रकृति का संरक्षण।	कचरे का उपयोग बाद में होने से बिमारियों में कमी।

अर्थ व्यवस्था के लिए लाभ–

निर्यात की सम्भावनाओं में वृद्धि ।	घरेलू उद्योग को बढ़ावा ।
श्रोजगार में वृद्धि ।	फसल उत्पादन लागत में कमी ।
कृषकों की आय मेंवृद्धि ।	अंतर्राष्ट्रीय बाजार की मांग में वृद्धि ।
उत्तम चारा की उपलब्धता से पशु उत्पाद में मात्रात्मक एवं गुणात्मक वृद्धि ।	

उपभोक्ताओं को लाभ–

स्वास्थ्य कर कृषि उत्पाद की प्राप्ति ।	(जैविक उत्पादमें 30–40%अधिक एंटीऑक्सीडेंट)
बिमारियों का खतरा कम ।	स्वास्थ देखभाल खर्चे में कमी ।

जैविक कृषि की चुनौतियां–

श्रम सघन कृषि ।	जैविक खाद उत्पादकों का असंगठित क्षेत्र मेंहोना ।
जैविक खाद की उपलब्धता ।	बिना प्रमाणिकरण खाद असंगठित क्षेत्र द्वारा आपूर्ति करना
बढ़ती जनसंख्या में खाद्य संबंधी आवश्यकता ।	शुरुआत में जैविक कृषि पद्धति से उत्पादन में गिरावट ।
त्वरित गरीबी निवारण में सहायक नहीं ।	कुछ जैविक उत्पादों में अतिशीघ्र सदन की समस्या ।
कृषकों में पर्याप्त प्रचार–प्रसार का आभाव ।	सरकारी सहायता तक आम किसानो की पहुंच न होना ।
शिक्षण–प्रशिक्षण की कमी ।	रासायनिक खेती से जैविक खेती में जाने पर अधिक समय लगना ।
सरकारी उदासीनता तथा योजनाओं में गड़बड़ी ।	
उपाय–	
कृत्रिम खाद्य व कीटनाशकों के हतोत्साहित करना	एजोला वर्मीकम्पोस्ट इकाइयां विकसित की जाए ।
स्रकारी सहायता सब्सिडी का विस्तार बढाने हेतु वैधानिक ढांचा ।	जैविक खेती के फायदे और रासायनिक खेती के नुकसान के प्रति जागरूकता ।
जैविक उत्पादों के लिए बाजार एवं वितरण केंद्र की व्यवस्था ।	जैविक कृषि हेत ुकिसानों को प्रशिक्षण तथा प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना ।